संधि - प्रकरण

- संधि :-
दो अत्यंत संयोगी वर्णों के मिलने से उत्पन्न विकार को, संधि कहते हैं।
संस्कृत भाषा में तीन संधियाँ हैं :-
i) अच् संधि (स्वर संधि)
ii) हल् संधि (व्यञ्जन संधि)
iii) विसर्ग संधि

i) अच् संधि (स्वर संधि) :-
स्वर वर्णों के मेल के कारण स्वर वर्णों में उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते हैं।
इसके पाँच भेद हैं -
(क) दीर्घ संधि (अकः सवर्णे दीर्घः)
(ख) गुण संधि (आद्गुणः)
(ग) यण् संधि (इको यणचि)
(घ) वृद्धि संधि (वृद्धिरेचि)
(ङ) आयादि संधि (एचोऽयवायावः)

दीर्घ - सन्धि

⇒ दो समान स्वरों को मिलाकर एक दीर्घ स्वर हो जाता है। आ, ई, ऊ, ॠ ये दीर्घ स्वर हैं।
यथा :-

अ + अ = आ	इ + ई = ई
अ + आ = आ	इ + इ = ई
आ + आ = आ	ई + इ = ई
आ + अ = आ	ई + ई = ई

उ + उ = ऊ	ऋ + ऋ = ॠ
उ + ऊ = ऊ	ऋ + ॠ = ॠ
ऊ + उ = ऊ	ॠ + ऋ = ॠ
ऊ + ऊ = ऊ	ॠ + ॠ = ॠ

उदाहरण :-	वर्णों का मेल	नया वर्ण
दक्षिण + अरण्ये = दक्षिणारण्ये	अ + आ	आ
अधि + ईश्वरः = अधीश्वरः	इ + ई	ई
नदी + ईशः = नदीशः	ई + ई	ई
भानु + उदयः = भानूदयः	उ + उ	ऊ
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्	ऋ + ऋ	ॠ
विद्या + आलयः = विद्यालयः	आ + आ	आ
राम + अयनम् = रामायणं	अ + अ	आ
देव + आत्मा = देवात्मा	अ + आ	आ
देव + आलयः = देवालयः	अ + आ	आ
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी	आ + अ	आ
तत्र + आसीत् = तत्रासीत्	अ + आ	आ

गुण संधि

⇒ यदि अ या आ के बाद इ या ई रहे तो दोनों को मिलाकर 'ए' हो जाता है। यदि अ या आ के बाद उ या ऊ रहे तो दोनों को मिलाकर 'ओ' हो जाता है। यदि अ या आ के बाद ऋ रहे तो दोनों को मिलाकर 'अर्' हो जाता है।

यथा :-

अ / आ + इ / ई = ए (े)
अ / आ + उ / ऊ = ओ (ो)
अ / आ + ऋ = अर् (र्)

उदाहरण	वर्णों का मेल	नया वर्ण
परम + ईश्वरः = परमेश्वरः	अ + ई	ए (े)
लम्ब + उदरः = लम्बोदरः	अ + उ	ओ (ो)
राका + ईशः = राकेशः	आ + ई	ए (े)
महा + इन्द्रः = महेन्द्रः	आ + इ	ए (े)
महा + ऋषिः = महर्षिः	आ + ऋ	अर् (र्)
गण + ईशः = गणेशः	अ + ई	ए (े)
महा + उदयः = महोदयः	आ + उ	ओ (ो)
मास + ऋतुः = मासर्तुः	अ + ऋ	अर् (र्)
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः	अ + उ	ओ (ो)

उदाहरण	वर्णों का मेल	नया वर्ण
सदा + एव = सदैव	आ + ए	ऐ
तदा + एव = तदैव	आ + ए	ऐ
तथा + एव = तथैव	आ + ए	ऐ
धन + ओघः = धनौघः	अ + ओ	औ
जल + ओघः = जलौघः	अ + ओ	औ
महा + ओषधि = महौषधि	आ + ओ	औ
मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्	अ + ऐ	ऐ
अत्र + एव = अत्रैव	अ + ए	ऐ
तत्र + एव = तत्रैव	अ + ए	ऐ
अद्य + एव = अद्यैव	अ + ए	ऐ
महा + औषधम् = महौषधम्	आ + औ	औ
एक + एकम् = एकैकम्	अ + ए	ऐ
गंगा + ओघः = गंगौघः	आ + ओ	औ
दिव्य + औषधम् = दिव्यौषधम्	अ + औ	औ

[आयादि-सन्धि]

⇒ यदि बाद में कोई स्वर रहे तो ए का 'अय्', ओ का 'अव्', ऐ का 'आय्' औं औं का 'आव्' हो जाता है।

यथा :-

(ए ऐ ओ औं = अयाय् अवाव्)

उदाहरण	वर्णों का मेल	नया वर्ण
शे + अनम् = शयनम्	ए + अ	अय्
पो + अनः = पवनः	ओ + अ	अव्
गै + अकः = गायकः	ऐ + अ	आय्
पौ + अकः = पावकः	औ + अ	आव्
ने + अकः = नायकः	ऐ + अ	आय्
भो + अनम् = भवनम्	ओ + अ	अव्
विनै + अकः = विनायकः	ऐ + अ	आय्
ने + अनम् = नयनम्	ए + अ	अय्

यण् - संधि

⇒ यदि इ, ई, उ, ऊ, ऋ और लृ के बाद अपने से कोई भिन्न स्वर हो तो इ, ई का य्, उ, ऊ का व्, ऋ का र तथा लृ का ल् हो जाता है।

यथा :-

(इ उ ऋ लृ को करे य् व् र् ल् यण् हेतु)

नोट - संस्कृत में लृ भी एक स्वर है।

उदाहरण	वर्णों का मेल	नया वर्ण
इति + आकर्ण्य: = इत्याकर्ण्य	इ + आ	या
इति + उक्त्वा = इत्युक्त्वा	इ + उ	यु
धातृ + अंश = धात्रंश	ऋ + अ	र
लृ + आकृति: = लाकृति:	लृ + आ	ला
अति + उक्ति: = अत्युक्ति:	इ + उ	यु
यदि + अपि = यद्यपि	इ + अ	य
अति + आचार: = अत्याचार:	इ + आ	या
पितृ + आदेश: = पित्रादेश:	ऋ + अ	र
सु + आगतम् = स्वागतम्	उ + आ	वा

वृद्धि - संधि

⇒ यदि अ या आ के बाद ए या ऐ रहे तो दोनों को मिलाकर 'ऐ' हो जाता है। यदि अ या आ के बाद ओ या औ रहे तो दोनों को मिलाकर 'औ' हो जाता है।

यथा :-

अ / आ + ए / ऐ = ऐ

अ / आ + ओ / औ = औ